स्यानंदवर्धनं॥ उत्सुकोभूज्जनोद्रष्टुंनमयोध्यामहोत्सवं॥ २०॥ एवंनज्जनसंवाधंराजमार्गेपुरोहिनः॥ व्यूहिनवजनोघंतंशनैराज